प्रश्न – बाल विकास में बच्चों एवं बड़ों के आपसी सम्बन्धों का वर्णन करो।

उत्तर –

भूमिका – बालक परिवार से निकलकर दूसरे समूह तथा मित्र-मण्डली में जाकर खेलता है, जिससे बालक के सम्बन्ध बनने के साथ-साथ समूह व मित्र-मण्डली का प्रभाव भी पड़ता है। प्रायः व्यक्ति जिस स्थान पर निवास करता है उस समुदाय के द्वारा बाल विकास को पूर्णतः प्रभावित किया जाता है। बाल विकास के अनेक पक्ष ऐसे हैं जो कि वहाँ के पर्यावरण द्वारा प्रभावित होते हैं। क्योंकी बच्चों में अनुकरण की आदत पायी जाती है। इसलिए समुदाय के व्यक्तियों में जिस प्रकार की आदतें होंगी उसका प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों पर अवश्य पड़ता है। बाल विकास पर बड़ों एवं मित्र-समूहों के सम्बन्धों का प्रभाव निम्न प्रकार से पड़ता है –

1. शारीरिक विकास पर प्रभाव – जिस समुदाय में शारीरिक विकास को महत्व देने वाले व्यक्ति निवास करते होंगे उस समुदाय में बच्चों का शारीरिक विकास को महत्व देने वाले निवास करते होंगे। उस समुदाय में बच्चों का शारीरिक विकास तीव्र गति से होगा तथा उनका स्वास्थ्य उत्तम होगा क्योंकी बच्चे समुदाय में रहने वाले व्यक्तियों से अनेक प्रकार से व्यायाम सीखेंगे।

2. मानसिक विकास पर प्रभाव – बालक जिस समूह में रहता है उसका मानसिक विकास का प्रभाव बालक पर भी पड़ता है जिससे बच्चों में चिन्तन व तर्क शक्ति का

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

RAJDHANI PAGE DATE: / /

विकास होता है, जिस समुदाय में वाद-विवाद कार्यक्रम सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विज्ञान विषयों से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, उस समुदाय के बच्चों का मानसिक विकास तीव्र गति से होता है।

3. संवेगात्मक विकास पर प्रभाव - जब बालक परिवार के सदस्यों एवं सगे सम्बन्धियों में संवेग देखता है तो उसका प्रभाव बालक पर पड़ता है और बालक आये दिन विवाद एवं कलह देखता है, व्यक्तियों को क्रोध व चिन्तित अवस्था में देखता है तो उसका प्रभाव बच्चों के संवेगों पर पड़ता है।

4. भाषीय विकास पर प्रभाव - समुदाय के भाषीय दोषों का प्रभाव बच्चों के भाषीय विकास पर स्पष्ट रूप से पड़ता है। राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्रों में क. को के तथा ख को खे बोलना समुदाय के प्रभाव को प्रदर्शित करता है। जिस समुदाय में भाषागत शुद्धता एवं स्पष्ट उच्चारण को ध्यान में रखा जाता है उसके बच्चे भी शुद्ध उच्चारण एवं स्पष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं।

5. सामाजिक विकास पर प्रभाव - सामाजिक व्यवस्था बालक के सामाजिक विकास को एक निश्चित रूप और दिशा प्रदान करती है। समाज के कार्य आदर्श और प्रतिमान बालक के दृष्टिकोणों का

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

निर्माण करते है। जिस समुदाय मे व्यक्ति सामाजिक गुणो से युक्त होते है तथा प्रेम व सहयोग की भावना से परस्पर व्यवहार करते है। उस समुदाय मे बच्चो का विकास आदर्श रूप मे होता है।

6 नैतिक विकास पर प्रभाव – समुदाय की परिस्थितियो का बच्चो के चरित्र पर प्रभाव पड़ता है समुदाय के व्यक्ति यदि चारित्रिक गुणो से युक्त होंगे तो बच्चे भी नैतिकता पूर्ण व चरित्रवान होंगे। प्रायः चोर एवं शराब पीने वाला समुदाय के बच्चे चोरी एवं शराब पीना सीख लेते है क्योंकी उस समुदाय का प्रभाव उन पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

7. सृजनात्मकता पर प्रभाव – जिस समुदाय मे इजाद सम्बन्धी कार्यक्रम को अपनाने वाले व्यक्तियों का बाहुल्य होगा उस समुदाय मे बच्चो की सृजनात्मकता का विकास तीव्र गति गति से होता है। चित्रकार एवं हस्त कौशल से युक्त समुदाय के बच्चे प्रायः चित्र बनाने मे एवं अन्य वस्तुओं के सृजन मे शीघ्र कुशल हो जाते हैं क्योंकी अधिकांश समय बच्चा जिस कार्य को देखता है उसको सीखने मे कम समय लगाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

8. शैक्षिक विकास पर प्रभाव — जिस समुदाय में व्यक्ति शिक्षित होते हैं तथा शिक्षा के महत्व को समझते हैं उस समुदाय में शिक्षा की स्थिति सुदृढ़ होती है। इसका प्रभाव बच्चों पर भी पड़ता है। इस प्रकार के समुदाय में बच्चों का शैक्षिक विकास तीव्र गति से होता है। इसके विपरीत अशिक्षित समुदाय में शिक्षा के महत्व को व्यक्ति नहीं समझते हैं तथा बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते हैं। इस स्थिति में बच्चों का शैक्षिक विकास अपेक्षित नहीं होता है।

निष्कर्ष — परिवार बालक के विकास की प्रथम पाठशाला है यह बालक में निहित योग्यताओं एवं क्षमताओं का विकास करता है। परिवार सम्बन्धों की वह व्यवस्था है जो माता-पिता तथा सन्तानों के मध्य पायी जाती है। बच्चों के विकास में जैसा उपरोक्त वर्णन किया है परिवार के प्रत्येक सदस्य का पूर्ण प्रभाव पड़ता है। प्लेटो के अनुसार "यदि आप चाहते हैं कि बालक सुन्दर वस्तुओं की प्रशंसा और निर्माण करे तो उसके चारों ओर सुन्दर वस्तुएँ प्रस्तुत कीजिए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

समूचे पाठ्यक्रम में भाषा

प्रश्न – परिवार का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषतायें बताइये।

उत्तर – परिवार का अर्थ एवं परिभाषा – हिन्दी का परिवार शब्द अंग्रेजी के Family शब्द का पर्याय है। Family शब्द की उत्पत्ति लैटिन के 'Famulus' शब्द से हुई है जिसका तात्पर्य माता-पिता, बच्चे, नौकर व दास से निर्मित समूह से होता है लेकिन समाजशास्त्रीय अर्थ अधिक व्यापक है। विभिन्न विद्वानों ने परिवार को इस प्रकार परिभाषित किया है।

लूसीमेयर के अनुसार, "परिवार एक गृहस्थ समूह है, जिसमें माता-पिता और सन्तान साथ-साथ रहते हैं, इसके मूलरूप में दम्पति और उनकी सन्तान रहती है।

परिवार की विशेषताएँ :-

1 सार्वभौमिकता :- सामाजिक इकाईयों में परिवार सबसे मौलिक एवं छोटी इकाई है। इसलिए यह सामाजिक विकास के सभी स्तरों में सभी समाजों में पाई जाती है।

2. भावात्मक आधार – परिवार के सभी सदस्य भावात्मक आधार पर एक-दूसरे से बन्धे होते हैं, इन सदस्यों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है जिसका आधार त्याग एवं वात्सल्य होता है, स्वार्थ नहीं। ये भावनाएँ सम्बन्धों को अधिक स्थायित्व एवं दृढ़ता प्रदान करती है।

3. रचनात्मक प्रभाव :- रचनात्मक का तात्पर्य सामाजिक सन्तुलन एवं विकास में सहायक है। परिवार के छोटे सदस्यों पर बड़े सदस्यों का सीधा प्रभाव पड़ता है। जिसके कारण बच्चा परिवार में विद्यमान सांस्कृतिक गुणों को आत्मसात कर अपना सामाजिक व्यक्तित्व निर्मित करता है।

4. छोटा आकार :- समाज के द्वैतीयक इकाईयों के समान परिवार की सदस्य संख्या अधिक नहीं होती, इसलिए आकार छोटा होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

5. सामाजिक संरचना में केन्द्रीय स्थिति :-
सामाजिक संरचना मूलतः अनेक परिवारों के योग से ही बनता है आदिम समाजों में कई संगठन, जैसे गोत्र, मातृदल आदि की सदस्यता परिवार के आधार पर ही प्राप्त होती है।

6. असीमित उत्तरदायित्व -
परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है, जिसमें व्यक्ति पैदा होता है, बड़ा होता है तथा सदस्यता को प्राप्त करता है। इसलिए परिवार के सदस्यों के असीमित उत्तरदायित्व होते हैं जो व्यक्ति की आधिकाधिक आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करती है।

7. सामाजिक नियन्त्रण :- प्रत्येक समाज अपने लिए जीवन के कुछ मूल्यों का निकास करती है जो व्यक्ति एवं परिवार से सम्बन्धित प्रथाएँ एवं रूढ़ियों को बनाए रखने एवं उन पर नियन्त्रण रखने में योग देती है।

निष्कर्ष :- वस्तुतः परिवार का अर्थ है - परिवेश, घर की दीवारें और छत नहीं। परिवार का परिवेश अनेक प्रकारों से परिपूर्ण होता है। इस परिवेश में स्नेह और आचार दोनों साथ-साथ रहते हैं। स्नेह देने से माता-पिता को बालक के ऊपर एक विशेष अधिकार मिलता है। परिवार या घर का अस्तित्व बहुत कुछ मानसिक या भावनात्मक होता है। परिवार में निःस्वार्थ स्नेह, सुरक्षा, साथ, सौहार्द, सम्मान तथा परस्पर समर्पण के भाव पलते हैं। इनसे मुक्त परिवेश से अपनापन का भाव निःसृत है। यही भाव घर या परिवार कहलाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न - बालक के विकास में परिवार के महत्व का वर्णन करो।

उत्तर - परिवार समाज की मजबूत इकाई है। बालक को एक सफल नागरिक बनाने में परिवार अपनी कुछ जिम्मेदारियों को निभाता है। जो इस प्रकार है -

1. शिक्षा - परिवार बालक की पहली पाठशाला है। स्कूल जाने से पहले बालक को घर में सिखाया जाता है कि बड़ों का आदर-सम्मान कैसे करना है। खाना-पीना, रहना-सोना, सभी गतिविधियों की जानकारी परिवार से ही मिलती है। इन सबके बाद बालक को विद्यालय भेजने की जिम्मेदारी परिवार की होती है। परिवार अपनी तथा सन्तान की प्रगति के लिए शिक्षा की व्यवस्था करता है क्योंकी उत्तम शिक्षा ही बालक को सफलता की मंजिल प्राप्त करने में मदद करती है।

2. शिशु-पालन - परिवार का मुख्य जिम्मेदारी बालक का पालन-पोषण करना है। बच्चे का पालन-पोषण सबसे अच्छे माता पर निर्भर करता है। अगर पालन-पोषण में कमी होती है, तो बालक का विकास सुचारू नहीं है जिस तरह से परिवार में बच्चे का जन्म होता है वह उसी प्रकार के तौर-तरीके तथा भाषा को सीखता है। परिवार के लोगों के बीच में रहकर ही वह प्रेम, अच्छाई, मूल्यों तथा आपसी सहयोग का पाठ पढ़ाता है। अगर परिवार के द्वारा बालक का उचित पोषण नहीं हो पाता है तो वह बालक परिवार तथा समाज में ठीक से समायोजन नहीं कर सकता।

आकांक्षाओं की पूर्ति - जैसे बालक की वृद्धि व विकास होता है उसी प्रकार बालक की आकांक्षाएं बढ़ती चली जाती है उनकी बढ़ती आकांक्षाओं की पूर्ति परिवार में ही हो सकती है

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

क्योंकी परिवार के सभी सदस्यों समाज के सुखों और दुखों को सहन करते हुए अपने बच्चों की इच्छाओं की पूर्ति करते है जिससे बालक के व्यक्तित्व के अनुकुल अनेक गुणों का निर्माण होता है।

4. नैतिक मूल्यों का विकास – प्रत्येक समाज के अपने कुछ नियम और सिद्धान्त होते हैं। इन नियमों के पालन की नैतिकता तथा सिद्धान्तों के अनुसार आचरण का पालन करने वाली व्यक्ति को चरित्र कहते है। बालक व समाज को तब तक हम सफल या सुसंस्कृतपूर्ण नहीं कह सकते जब तक उनमें नैतिकता व चरित्र के गुण ना घुले हुए हो। यदि घर के सदस्य नैतिकता का रास्ता अपनाते है तो उनका अनुकरण करने वाले बच्चे नैतिकता का सच्चा पाठ पढ़ेगें। ऐसे घरों के बच्चे बड़ों की आज्ञा पालन, सत्य बोलना, इमानदारी तथा परोपकार जैसे गुणों का ग्रहण करते है।

5. व्यक्तित्व का विकास – परिवार बालक के व्यक्तित्व के निर्माण में पूरी जिम्मेदारी निभाता है। परिवार के प्रतिमान जिस प्रकार के होते है उसी तरह का बालक का व्यक्तित्व होता है। अगर बालक संयुक्त परिवार में पलता है तो वह बच्चा समूह में रहना तथा सभी की मदद करने के लिए हमेशा तयार रहता है। एकाकी परिवार में रहने वाले बालक की सभी आकांक्षाओं की पूर्ति होने के कारण उसका व्यक्तित्व अलग बनता है। संयुक्त परिवार में रहने वाले बालक की सीमित आकांक्षाएं पूर्ति होती है इससे उनका अलग व्यक्तित्व बनता है।

6. सांस्कृतिक विकास – बालक में अच्छे सांस्कृतिक गुणों का विकास करना भी परिवार की जिम्मेदारी है। बालक जिस प्रकार में जन्म लेता है उसी परिवार

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

RAJEHANI
PAGE
DATE

भी वेशभूषा, खान-पान रहन-सहन वह ग्रहण करता है, क्योंकी परिवार ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सांस्कृतिक तत्वों को हस्तांतरित करता है। बचपन में परिवार के द्वारा सिखाए गए रीति-रिवाज और संस्कार बालक के जिन्दगी भर काम आते हैं।

7- सामाजिकता का विकास- बालक में अच्छे सांस्कृतिक गुणों का विकास करना भी परिवार की जिम्मेदारी है। बालक जिस परिवार में जन्म लेता है उसी परिवार की वेशभूषा, सभी परिवार के अन्तर्गत होता है। सामाजिक विकास का मतलब है समाज में प्रेम सहानुभूति, सहयोग तथा समायोजन पूर्वक रहना सीखना, परिवार तथा समाज में एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करना, एक दूसरे के साथ प्यार से रहने की शिक्षा परिवार ही देता है। अगर परिवार के लोग खुद एक दूसरे से प्रेम नहीं करते अर्थात उनके पारिवारिक सम्बन्ध अच्छे नहीं है तो ऐसे परिवार अपने बच्चों को भी सामाजिकता का पाठ नहीं पढ़ा सकेंगे, उन्हें परिवार कहना उचित नहीं है और जो परिवार अपने बच्चों को समाज घर स्कूल में प्यार से रहना सिखाते हैं तो ऐसे परिवार संस्कारी परिवार कहलाते हैं।

8. पारिवारिक सम्बन्ध- हम सभी जानते हैं कि परिवार के सभी लोग आपस में किसी ना किसी सम्बन्ध से बंधे होते हैं। उनका सम्बन्धों में बंधा होना ही पारिवारिक सम्बन्ध कहलाता है। जैसे - माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची के आपस में रिश्ते बने होते हैं। इन सम्बन्धों में बंधे होने के कारण इनको एक दूसरे सम्बन्धों के प्रति कुछ जिम्मेदारियाँ भी होती हैं। अगर परिवार के सभी लोग आपस में अपनी

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

जिम्मेदारियों को ठीक से निभाते हैं तथा परिवार के लोगों की मदद करते हैं तो वह परिवार एक समृद्ध परिवार बनता है तथा समाज में अपनी जगह बनाता है और अगर परिवार में अच्छे सम्बन्ध नहीं होते तो कोई उस परिवार को पसन्द नहीं करता। अच्छे परिवारों का असर उनके बच्चों पर भी अच्छा पड़ता है।

निष्कर्ष :- वैज्ञानिक और आधुनिकीकरण के युग के कारण आज परिवार का स्वरूप बदलता जा रहा है, इस बदलते स्वरूप में परिवर्तन के कारण पहले बच्चों को जो शिक्षा घर परिवार से मिलती थी, अब वो शिक्षा ~~मिलनी~~ मिलनी कठिन होती जा रही है, क्योंकि घर में बच्चे की यह शिक्षा तभी सम्भव है जब उसके सदस्यों के बीच प्रेम, सहानुभूति, स्नेह हो तथा वे साक्षर और शिक्षित हो, सभ्य एवं चरित्रवान हो। पेस्टालोजी के अनुसार "परिवार प्रेम और स्नेह का केन्द्र है शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान है और बच्चे विद्यालय है।" परन्तु आज हमारे देश में परिवारों की दशा में भारी परिवर्तन हो रहा है और यह परिवर्तन का ही नतीजा है कि भारतीय परिवारों में गुणों की कमी होती जा रही है, पारिवारिक सम्बन्ध टूटते जा रहे हैं। परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम और सहानुभूति जैसी चीजें ही नहीं रही जो कि एक परिवार में होनी चाहिए। इनका कारण है हम पश्चिमीकरण, औद्योगीकरण तथा आर्थिक दबाव कह सकते हैं क्योंकि आज हमारी आवश्यकताओं का बढ़ जाना तथा विदेशों की देखा-देखी तथा विलासिता की जिन्दगी के कारण।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न – बाल विकास में बच्चों एवं बड़ों के आपसी सम्बन्धों का वर्णन करो।

उत्तर –

भूमिका – बालक परिवार से निकलकर दूसरे समूह तथा मित्र-मण्डली में जाकर खेलता है, जिससे बालक के सम्बन्ध बनने के साथ-साथ समूह व मित्र-मण्डली का प्रभाव भी पड़ता है। प्रायः व्यक्ति जिस स्थान पर निवास करता है उस समुदाय के द्वारा बाल विकास को पूर्णतः प्रभावित किया जाता है। बाल विकास के अनेक पक्ष ऐसे हैं जो कि वहाँ के पर्यावरण द्वारा प्रभावित होते हैं। क्योंकी बच्चों में अनुकरण की आदत पायी जाती है। इसलिए समुदाय के व्यक्तियों में जिस प्रकार की आदतें होंगी उसका प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों पर अवश्य पड़ता है। बाल विकास पर बड़ों एवं मित्र-समूहों के सम्बन्धों का प्रभाव निम्न प्रकार से पड़ता है –

1. शारीरिक विकास पर प्रभाव – जिस समुदाय में शारीरिक विकास को महत्व देने वाले व्यक्ति निवास करते होंगे उस समुदाय में बच्चों का शारीरिक विकास को महत्व देने वाले निवास करते होंगे। उस समुदाय में बच्चों का शारीरिक विकास तीव्र गति से होगा तथा उनका स्वास्थ्य उत्तम होगा क्योंकी बच्चे समुदाय में रहने वाले व्यक्तियों से अनेक प्रकार से व्यायाम सीखेंगे।

2. मानसिक विकास पर प्रभाव – बालक जिस समूह में रहता है उसका मानसिक विकास का प्रभाव बालक पर भी पड़ता है जिससे बच्चों में चिन्तन व तर्क शक्ति का

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

RAJDHANI PAGE DATE: / /

विकास होता है, जिस समुदाय में वाद-विवाद कार्यक्रम सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विज्ञान विषयों से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, उस समुदाय के बच्चों का मानसिक विकास तीव्र गति से होता है।

3. संवेगात्मक विकास पर प्रभाव - जब बालक परिवार के सदस्यों एवं सगे सम्बन्धियों में संवेग देखता है तो उसका प्रभाव बालक पर पड़ता है और बालक आये दिन विवाद एवं कलह देखता है, व्यक्तियों को क्रोध व चिन्तित अवस्था में देखता है तो उसका प्रभाव बच्चों के संवेगों पर पड़ता है।

4. भाषीय विकास पर प्रभाव - समुदाय के भाषीय दोषों का प्रभाव बच्चों के भाषीय विकास पर स्पष्ट रूप से पड़ता है। राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्रों में क. को के तथा ख को खे बोलना समुदाय के प्रभाव को प्रदर्शित करता है। जिस समुदाय में भाषागत शुद्धता एवं स्पष्ट उच्चारण को ध्यान में रखा जाता है उसके बच्चे भी शुद्ध उच्चारण एवं स्पष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं।

5. सामाजिक विकास पर प्रभाव - सामाजिक व्यवस्था बालक के सामाजिक विकास को एक निश्चित रूप और दिशा प्रदान करती है। समाज के कार्य आदर्श और प्रतिमान बालक के दृष्टिकोणों का

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

निर्माण करते है। जिस समुदाय मे व्यक्ति सामाजिक गुणों से युक्त होते है तथा प्रेम व सहयोग की भावना से परस्पर व्यवहार करते है। उस समुदाय मे बच्चों का विकास आदर्श रूप मे होता है।

6. नैतिक विकास पर प्रभाव - समुदाय की परिस्थितियों का बच्चों के चरित्र पर प्रभाव पड़ता है समुदाय के व्यक्ति यदि चारित्रिक गुणों से युक्त होंगे तो बच्चे भी नैतिकता पूर्ण व चरित्रवान होंगे। प्रायः चोर एवं शराब पीने वाले समुदाय के बच्चे चोरी एवं शराब पीना सीख लेते है क्योंकी उस समुदाय का प्रभाव उन पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

7. सृजनात्मकता पर प्रभाव - जिस समुदाय में इजाद सम्बन्धी व्यवसाय को अपनाने वाले व्यक्तियों का बाहुल्य होगा, उस समुदाय में बच्चों की सृजनात्मकता का विकास तीव्र गति गति से होता है। चित्रकार एवं हस्त कौशल से युक्त समुदाय के बच्चे प्रायः चित्र बनाने मे एवं अन्य वस्तुओं के सृजन मे शीघ्र कुशल हो जाते है क्योंकी अधिकांश समय बच्चा जिस कार्य को देखता है उसको सीखने मे कम समय लगाता है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

8. शैक्षिक विकास पर प्रभाव — जिस समुदाय में व्यक्ति शिक्षित होते हैं तथा शिक्षा के महत्व को समझते हैं उस समुदाय में शिक्षा की स्थिति सुदृढ़ होती है। इसका प्रभाव बच्चों पर भी पड़ता है। इस प्रकार के समुदाय में बच्चों का शैक्षिक विकास तीव्र गति से होता है। इसके विपरीत अशिक्षित समुदाय में शिक्षा के महत्व को व्यक्ति नहीं समझते हैं तथा बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते हैं। इस स्थिति में बच्चों का शैक्षिक विकास अपेक्षित नहीं होता है।

निष्कर्ष — परिवार बालक के विकास की प्रथम पाठशाला है यह बालक में निहित योग्यताओं एवं क्षमताओं का विकास करता है। परिवार सम्बन्धों की वह व्यवस्था है जो माता-पिता तथा सन्तानों के मध्य पायी जाती है। बच्चों के विकास में जैसा उपरोक्त वर्णन किया है परिवार के प्रत्येक सदस्य का पूर्ण प्रभाव पड़ता है। प्लेटो के अनुसार "यदि आप चाहते हैं कि बालक सुन्दर वस्तुओं की प्रशंसा और निर्माण करे तो उसके चारों ओर सुन्दर वस्तुएँ प्रस्तुत कीजिए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न - बच्चों में भाषा का विकास किस प्रकार होता है?

उत्तर - भूमिका - भाषा अर्जन वह प्रक्रिया है, जिसमें मानव सम्प्रेषण करने के लिए शब्दों को समझने, निर्माण करने और उनका प्रयोग करने की क्षमता अर्जित करता है। इस क्षमता में कुछ उपक्षमताएँ शामिल हैं, जैसे वाक्य की संरचना करना उच्चारण करना और शब्द भंडार का निर्माण करना। यह भाषा मुँह से भी बोली जा सकती है और हाथ से चिह्नों के माध्यम से लिखी भी जा सकती है। भाषा अर्जन से सामान्य तौर पर अभिप्राय है बच्चे द्वारा जन्म के बाद पहली बार भाषा सीखना। इसे पहली भाषा अर्जित करना कहते हैं। उसके बाद वह स्कूल में अन्य भाषाएँ भी सीखता है जिन्हें दूसरी भाषा अर्जित करना कहते हैं उदाहरण के लिए, हिन्दी भाषी माता-पिता के बच्चे की पहली अर्जित भाषा हिन्दी होती है और अंग्रेजी उसकी दूसरी अर्जित भाषा होती है। जैसे - विचार, संवेदना भावना, व्यवहार आदि का महत्वपूर्ण योगदान है।

भाषा का विकास - जन्म के समय बच्चा अपनी जरूरतों के लिये रोता है। धीरे-धीरे उसका रोना कुछ अलग सा हो जाता है और माँ उसकी भूख, परेशानी और दुःख के रोने में भेद कर सकती है। 3 माह तक वह किलकारी करने लगता है अर्थात जब भी वह प्रसन्न होता है, या गोदी में उठाया जाता है तब वह किलकारी करता है। 6 से 7 महीने में किलकारी बबलाहट में बदल जाती है, जैसे मा-मा, बा-बा आदि शब्दों को दोहराना।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

PAGE
DATE

9 वें महीने तक बच्चा कुछ - कुछ शब्द बोल पाता है और एक ही शब्द पूरे वाक्य के लिए पर्याप्त होता है जैसे गुड़िया । 1 साल का होते होते दो शब्दों को जोड़ सकता है। दो वर्ष में वह 2 या 3 शब्दों के वाक्य प्रयोग कर सकता है। 5 साल की आयु तक एक बच्चे की शब्दावली लगभग 5000 शब्दों की होती है। यह शब्दकोश फिर तीव्रता से बढ़ता है।

भाषा अर्जन की प्रक्रिया -

भाषा को सीखने के लिए एक बालक लोगों को बोलते सुनता है और उनके द्वारा बोली गई ध्वनियों की पहचान करता है। ध्वनियों को सुनकर वह उनकी नकल करना सीखता है। एक बालक सबसे पहले प और ब ध्वनियां निकालता है। धीरे - धीरे वह ध्वनियों को आपस में मिलाकर शब्द बनाना सीख लेता है जैसे पा और पा को मिलाकर पापा कहना सीख लेता है।

1. ध्वनियों में भेद करना - एक नवजात शिशु आस पास बोली जा रही ध्वनियों को सुनता है और इन ध्वनियों के स्रोतों को पहचानता है। वह यह पहचान पाता है कि आवाज किस दिशा से आ रही है। उसकी सुनने की योग्यता और उसे समझने की योग्यता समय के अनुसार बढ़ती जाती है। एक सप्ताह का नवजात शिशु अपनी माँ की आवाज को दूसरी आवाजों से अलग पहचानता है। 6 महीने के बालक से जब यह पूछा जाता है कि गेंद कहां है वह उत्तर दे देता है। इससे यह पता लगता है कि एक बालक भाषा की योग्यता जन्म से ही लेकर पैदा होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2. बोलने की शुरुआत करना – एक बालक जन्म से ही ध्वनियों को समझना शुरू कर देता है, लेकिन वह बोलना काफी समय बाद शुरू करता है। सभी बच्चों में भाषा का विकास एक निश्चित क्रम के अनुसार होता है इसके अभिप्राय है कि भाषा को सीखने का क्रम सभी बच्चों में सार्वभौमिक होता है। इससे पता चलता है कि सभी बच्चे भाषा को बोलना एक विशिष्ट आयु में आरम्भ करते हैं चाहे भाषा कोई भी हो। बच्चा में बोलने की शुरुआत निम्न चरणों में होती है –

(क) रोना –

बालक के जन्म के समय रोना उसके सम्प्रेषण का माध्यम होता है जब वह भूखा प्यासा होता है तो रो कर समझा देता है। वह अपनी प्रत्येक परेशानी को रो कर व्यक्त करता है। सभी माताएं समझ जाती है कि बच्चा क्यों रो रहा है। जन्म से लेकर एक महीने तक बालक केवल इसी तरह से सम्प्रेषण करता है।

(ख) चहचहाना –

एक महीने के बाद बच्चा चहचहाना शुरू कर देता है। यह स्थिति पांच 5 महीने तक रहती है। जब बच्चे खुश होते हैं या संतुष्ट होते हैं तब यह आवाज निकालते हैं। इस तरह की क्रियाएं बच्चे का संवेगात्मक विकास भी करती है, क्योंकी बच्चा अपने माता पिता को अपना संरक्षक समझने लग जाता है, धीरे-धीरे वह कुछ और ध्वनियां निकालने लग जाता है। उसकी ध्वनियों में उतार-चढ़ाव भी आ जाते हैं। वह इन ध्वनियों को मिलाकर शब्द बनाना सीख लेता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(ग) बड़बड़ाना – 6 से 10 महीने के बीच की आयु का बालक बड़बड़ाना शुरू कर देता है। वह कुछ ध्वनियाँ जैसे मा, दा, की, ने आदि को दोहराने लगता है जैसे दा दा दा आदि। नए शब्दों और ध्वनियों के साथ वह पहले की तरह प्रयोग करना जारी रखता है और उसका शब्द भण्डार बढ़ता चला जाता है।

(घ) पहला शब्द – 10 से 12 महीने के बीच की आयु में बच्चा पहला अर्थपूर्ण शब्द बोल पाता है। पहला शब्द वह माँ बोलता है। 12 महीने के बालक के पास तीन से दस शब्दों का भण्डार होता है। सबसे पहले बच्चा उन वस्तुओं से सम्बन्धित शब्दों को सीखता है जो उसके आसपास होते हैं। ये वे शब्द हैं जिनको आस-पास के लोग प्रयोग करते हैं उन गतिविधियों के नाम को सीख लेता है। उदाहरण के लिए, जब उसे प्यास लगती है तो वह केवल पानी शब्द ही बोलता है जिसका अर्थ माता-पिता समझ जाते हैं। जब वह अपनी मां की साड़ी को देखकर "साड़ी" बोलता है तो इससे अभिप्राय होता है "यह माँ की साड़ी है।"

निष्कर्ष – उपरोक्त विवरण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे की भाषा को सीखना किसी खेल को सीखने के समान है। भाषा के अंतर्गत कुछ कौशलों को सीखा जाता है मुख्य रूप से भाषा के कौशल चार होते हैं – बोलना, सुनना, लिखना और पढ़ना। जब हम भाषा को सीखने की प्रक्रिया पर ध्यान देते हैं तो पाते हैं कि बच्चा भाषा को दूसरों से सुनकर सीखता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner